

बसेरा वि. (तद्.) 1. बसने वाला, रहने वाली जगह 2. यात्री जिस स्थान पर रात भर रहकर समय बिताए 3. ठहरने का भाव मुहा. बसेरा करना- निवास करना; बसेरा लेना- रहना; बसेरा- सहारा देना।

बस्ता पुं. (फा.) 1. कपड़े का चौकोर टुकड़ा जिसमें पुस्तकें, बही, कापी आदि बाँधकर रखते हैं 2. बैठक।

बस्ती स्त्री. (तद्.) 1. लोगों के द्वारा घर बनाकर रहने की जगह, आबादी, जनसंकुल 2. यौगिक क्रिया जिसमें मुँह से पेट में कपड़े को डालकर पेट साफ किया जाता है।

बहँगी स्त्री. (तद्.) भार उठाने के लिए तराजू जैसी आकृति वाला एक भार वाहक, काँबर, श्रावण के मास में शिव भक्तों द्वारा बहँगीनुमा काँवड़ लेकर चलना।

बहकना अ.क्रि. (तद्.) 1. उचित रास्तों से न चलकर दूसरे गलत रास्ते पर चल देना, भटक जाना 2. भूल हो जाना, बहलना 3. अपनापन खो देना 4. मद में चूर हो जाना।

बहत्तर वि. (तद्.) गणना की संख्या, सत्तर में दो मिलाकर बनने वाली संख्या (72)।

बहन स्त्री. (तद्.) 1. बहिन, सहोदर भगिनी 2. स्रोत, प्रवाह 3. वाहन, सवारी अ.क्रि. 1. प्रवाहित होना, द्रव पदार्थ का स्रोत बहना 2. हवा का बहना, लबालब भरे पात्र से जलीय वस्तु का बाहर निकलना 3. घाव फूटकर बाहर निकलना 4. खो जाना, भटक जाना लाक्ष. 1. धन का व्यर्थ व्यय होना 2. किसी वस्तु का नष्ट होना 3. किसी का भार ढोना 4. पशुवाहन को खींच कर ले जाना।

बहनापा/बहिनापा पुं. (तद्.) 1. सहोदरा भगिनी जैसा प्रीति और सौहार्दपूर्ण व्यवहार और रिश्ता 2. सगी बहन वाला प्रेमसंबंध।

बहनोई पुं. (तद्.) बहन का पति।

बहनौता पुं. (तद्.) बहन का लड़का, भागिनिय, भांजा।

बहर क्रि.वि. (फा.) 1. बाह्य भाग, बाग 2. प्रत्येक, हर एक, हर तरह, हर हाल में पुं. (अर.) 1. बहुत बड़ा जलाशय या नदी 2. समुद्र 3. उर्दू-फारसी कविताओं का एक छंद विशेष।

बहरहाल क्रि.वि. (तत्.) 1. किसी कार्य के करने की वह स्थिति जब किसी निश्चित व्यक्ति के द्वारा या किसी निश्चित समय में सिद्ध या संभव न होने पर किसी अन्य के द्वारा हर हाल में या हर प्रकार से किया जाना अपेक्षित हो 2. हर अवस्था में, जैसे बने वैसे, प्रत्येक दशा में, उदा. 1. बहरहाल- अब यह कार्य तुम्हें ही करना है 2. बहरहाल- मेरा यह संदेश शाम तक अवश्य पहुँचा दे।

बहरा वि. (तत्.) कानों में किसी प्रकार का विकार होने के कारण जिसे दूसरे की कही हुई बात या अन्य कोई ध्वनि सुनाई न दे, या कम सुनाई दे लाक्ष. किसी ध्यान देने योग्य बात को ध्यान से न सुनने वाला, या सुनकर भी अनसुना करने वाला।

बहरिया वि. (तत्.) 1. वह व्यक्ति जो किसी स्थान पर बाहर से अर्थात् किसी अन्य जनपद या प्रांत से किसी उद्देश्य से रहने के लिए आया हो, बाहर का 2. घर-परिवार से भिन्न वे लोग जो किसी अवसर पर उपस्थित हुए हों 3. बाहर रहने वाला, बाहरी 4. वल्लभाचार्य आदि विशेष संप्रदाय के मंदिरों के वे छोटे कर्मचारी जो मंडप के अंदर न जाकर, बाहर ही काम करते हैं।

बहरू पुं. (देश.) तमिलनाडु, महाराष्ट्र तथा मध्य प्रदेश में होने वाला मझोले कद का चमकीली तथा मजबूत लकड़ी वाला वृक्ष स्त्री. (तद्.) 1. वह छोटी बैलगाड़ी जो रथ के आकार की तरह बनी हो 2. बहली 3. वि. छोटी (वस्तु), सरल।

बहलना अ.क्रि. (तद्.) 1. किसी प्रिय बात या अनुकूल प्रक्रिया से मन का ध्यान किसी अन्य की ओर लगने से चिंता, दुख या किसी निराशा